

CATALOGVS VARIO RVM SCRIP-
PTORVM, QVI AB AVTORE IN ANNOTA-
TIONIBUS CITANTUR.

| | | |
|--|--|--|
| A | Georgius Cedrenus Georgius Eder Georgius Pachymeres Georgius Sabinus Guazzus | Nicolaus Hemingius Nicolaus Nicolai Nonnus |
| Abrahani Orteliij Synonima Geographica | | O |
| Aelianus | | Oppianus |
| Aeneas Sylvius | | Otho Phrisingus |
| Alexander ab Alex | | Ouidius |
| Amadis Gallius | H | P |
| Ambrofius | Harmenopulus | Palæphanus Parius |
| Andreas Cambinus | Herodianus | Palmerius |
| Andreas Lacunensis | Herodotus | πανδέντες σει χειμοράχειον μανισ. |
| Anna Comnena | Hesiodus | P. Acmylius |
| dub. | Homerus | Paulus Diaconus |
| Antonius Genfræus | I | Paulus Iouilius |
| Appianus Alexandrinus | Ioachintus Camerarius | Petrus Bellonius |
| Aristophanes | Ioan. Antonius Campanus | Petrus Bizarus |
| Aristophanis Scholiafæstæ | Ioan. Bapista Egnatius | Petrus Gyllius |
| Aristoteles | Ioannes Dernschwimus | Pb. Melanchthon |
| B | Ioannes Funcius | Plinius |
| Bandelius | Ioannes Heldrichius | Plutarchus |
| Bapt. Fulgosus | Ioan. Leo Africanus | Q |
| Bæsilikæ | Ioan. de Montevilla | Qu. Curtius |
| Beniamini Tudelensis Itinerarium | Ioan. Petrus Contarenus ; de bello | S |
| Bern. Breidebachius | Cyprio | Sabellicus |
| Blondus | Ioan. Ramus | Sansoucius |
| C | Ioan. Tzetzæ | Sigismundus Herberstamius Baro |
| Chalcondyles | Ioannes Vrſpergenſis | Scidamus |
| Chrysostomus | Ioannes Zonaras | Sopater in Hermogenem |
| Cicero | Isidorus Card. | Sozomenus |
| Conradus Gesnerus | Iſocrates | Statius |
| Corona, nomenclatura barbarogra- ca | Iuuenalis | Stephanus de urbis |
| Cuspinianus | L | Strabo |
| D | Laoticus | Suidas |
| David Chytreus | Leander Alberti | Symeon Sethus |
| Demetrius Zenus Zacynthius | Lucianus | Symeonis Metaphraſtæ Icenda ac uitis sanctorum manus. |
| Demōſthenes | M | T |
| D. Erasmi Roterdami Adagia | M. Musurus | Theocritus |
| Diodorus Siculus | M. Lutherus | Theodorus Spanduginus Cantacuzenus |
| Diogenes lib. manusc. | Martinus Mylius | Theophylactus |
| Dioscorides | Mattheus Palmerius | Thomas Farellus |
| Drechslerus | Matthias Flaccius illyricus | Thucydides |
| E | Marinus Barletius | Titus Livius |
| Etymologicum magnum | Martyrologium Græc. manuscript. | V |
| Euripides | bibliothecæ Basil. | Volaterranus |
| Eusebius | Melchioris Seidlicij peregrinatio | Virgilius |
| Eustathius | Merlinus Cacanus | Vitæ patrum, manus. |
| F | Moschopulus | Venceslaus Budouuetzij à Badonna |
| Fauoritus | N | X |
| Fran. Philelphut | Naucratus | Xenophon |
| Franciscus Sansoucius | Neander Alexipharmacus | Z |
| Franciscus Solidus Strozzi | Nicephori Archiepiscopi Constan- | Zenobij prouerbiorum Epitome |
| G | timop. Chronologia | A 4 |
| Georgiehicius | Nicephorus Callistus | |
| | Nicephorus Gregoras | |
| | Nicetæ Acuminati choniæchistoria | |

ΕΡΤΑΣΤΗΡΙΟ ΕΡΕΤΡΩΝ ΝΟΜΟΥ ΙΩΑΝΝΙΝΑΣ
ΔΙΕΤΟΝΗΣ ΦΙΛΟΣΟΦΙΑΣ ΚΩΝΣΤΑΝΤΙΝΟΥ ΠΑΤΖΙΟΥ

TYPOGRAPHVS LECTORI S.

Varij literarum ducus & abbreviaturæ in Aurora's autographo, accedente etiam solita operarum iuxta, efficerunt, ut opinione nostra plures mentes
dñe, in præsens opus træpserint. Vt igitur etiam hanc in parte, humane Lector, tuo cōmodo consulteretur, eas quæ aliquiss monumenta videbantur, inter
relegendum, quoad eius fieri potuit, diligenter collectas, & iuxta operis seriem, in certis contextus Graeci, Latini & Annocationum classes, distris
buras, hinc apponere placuit. Vale, & operum nostram boni consule.

Duorum numerorum: prior, paginam, post erat, litteram deuotat. Unicus vero si fuerit, eiusdem, cuius numeris proximè praecessit, paginae versum intellige. Literaz uero hz: i, adde, d, dele, p, pro, l, lege, s, l, forte legendum, (in quibusdam enim abbreviaturis legendis diuinisq; suis) significant,

ERRATA GRÆCI CONTEXTVS. LIBER PRIMVS

¶ 31, vers. 12, τριαβιδ. u. s. 19, επιθετικη 2, 4, πλαζι. ιθιδ. 12, τω. item βιστικη, ibid. 14, κυριαβιδ. 19, επικρ. ibi. 36, επι. αναγ. 3, 2, οπαρι
χει. 32, θερ. 9, 4, ι. και/εργαζη. 6, οδυ. 1. εμ. 36, κει/λ. 1. εμ. 41, προ γυναιο λογε πνευματικη. 5, 32, πλαγιαρχη. 7, 24, αγ. πατ. 8, 11, π. γει. δια. 1. τ. εθιτη, 21.
ρ. επι. 1. πα. 9, 15, κειστη ιθιδ. 13, αντιτη. 26, παντοπη. 10, 18, πρινη. 24, τη/βασι. 49, ομηρ. 11, 3, αι γερχη. 47, 2, ιχθη. 13, 15, π. λιθη. 1, θυρη. 30,
χειδη. 35, οπρηπ. 1. εμ. 4, παντας απη. 48, ιηγετη. 3, 15, 30, ολητη. 51, κειρχη. 18, 16, 35, συνιντη. επι. 1. εμ. 17, 31, ιηγετη. 18, 24, ε. περιετ. 19, 3, αινειη
52, τητη. 10, 37, ποιηθη. 1. ιηγετη. 21, 15, π. ετ. 1. εμ. 18, ιηγετη. 1, 23, 11, παρη. 4, 4, διμοη. 23, 16, ιηγετη. 32, η αγ. θηη. 1, 4, 26, συνιντη πιε/εργαζη
επη. 44, τιθετη. 3, 28, 24, παραληρη. 29 πη, ποιη. Α1, 2, ιηγε. 31, 42, σφιλη. 32, 37, ουραγη. 48, συνιντη. επροκινη. 6, 33, 18, ιηγε. 31, συν
ιντη. επροκινη. 6, 37, 33, Α1, 2, ιηγε. 37, προσιδη. 38, 14, γηγη. 31, 40, καρπη. 28, πιθη. 41, 22, οεπη. 40, μετερθη. 1. 43, 7, ιηγε. 28, 45, επιλαξ
εμ. 50, κειη.

THEOD. ZYGMALÆ EPISTOLA.

LIBER SECUNDVS.

LIBER TERTIVS. PARTE PRIMA

PAg.217.vers.4.μηχαλε.21.πτερ.31.πολις.218.19.ρ.Α.Ι.ελάνη.ΙΙ.επιται.υετ.25.δ.23.υετ.31.πτεροφονειδει.32.Τ δολίνημ, item το δλένη. Sic & in sequentibus λαρε το ε. προ ελεινη. Ι. Αττικη. Σ. & C. ποιησαι γερετει. 210.31.πτεροφονειδει. 220.1.μηχάλη. 6. οβριδη. 18. πλατυπόδι. 23.ρ. καρ της Λαύρη. 29.ρ. μαζα. ι. μερέγγη. 35. αγγιάτη. 4.46. πιστότηλη. 4.9. περιπέτεια. 4.19.ρ. ουλη. (θηρευτικη. fuit) forte legendum τιλλε. ιεπι. ρ. αντριστεψι. δινε σηρ. 221.6. πελλαρη. 7. πρεμμηστη. 9. αεργ. ιεπι. χαλινη. 23. πτεροχειρη. 2.4. ιν παριγε. ι. Λεγειν. Τεριάνητην. 27.ρ. αερ. πρέπτην. 33. Αλισσα. 24. οι γυναικει. 35. π.εργ. πρεμμηστη. βαλι ηράκια. 41. προτ. fuit. 223.3. γιγαντ. 19. π.εργ. παρη. 17. πιλη. διάτοιη ή πάρη υπερονε αβετισκομ. ιβιδ. ι. πολτικη. 224. π. γραμμηστη. π.εργ. 33. Αλισσα. 22.35. πιληστη. 41. πιμη. θεσσα. 227.7. πιστόν ιησι. Αστριγει, γ. Αναθηλωτι. ποι. ποιησαι. omisita sunt hec verba πιλης αποβιτω πιον οι αλλ ζηρηγη. Θεσσα. ισαρη. ισαρη. 26. πιληστη. 47. πιλησον βιλημα. 129. iuxta sigillata. ill marginet. π. Ειδ. Σ. Μαρινα. 7. ποπουλη. 18. πατερο. ιπριας ιπειμητη. 26. πιληστη. 27. ποχηρη.

SECUNDA PARS LIBRI TERTII

2; 8.11, κανοῦσι τεττάρας πεντάκις, πανταχού μέγιστη ιδίαι, Λιοντάριον 239.3, παπαῖνον, 6, θάκησιν, 140.6, λευκόστην μεγάστην, 141.14, γραφών, 20, παπά, 22, μιγάδων, 241.23, γράφω, 144.13, γραφτών, 35, γενετική, 23, γεγονότα, 245.23, φίλω, 247.34, τιτικτι, 37.1, Λοδοί εἰς υμένος, 249.22, μικρόνυχος, 23, παστική, 25, διχρόνιος, 27, (2βξ βρεν.) φ. γ. ναθαναήλ, 36, καὶ γ. 251.3, ἀλισσών, 6, ἀπιβαίνειν, 18.1, ἀπέραντος, 10, μεταπεινεῖν, 40, μεττε, 41, θεττ. 2.252, γ., καθηγετάτη, 15, (abb. eu.) φ. λίγια, 27, p. ΑΙ, 1.κα 253.18, στράγγος, 254.4.6, στρατη, 256.16, θύμων, 22, ἀληθωνες, 36, κυρίων, 39, μιγάθη, 40, p. φ. λιθ. 43, φίλοι, 257.6, βεβημένη, 259.30, μέρραχτιμοντ, 47, πατ-
νηγγ', 26.2.18, πατερούχη, 29, οὐγούστη, 31, χειρόποντη, 42, οὐχικούρειν, 202, ηγετού, 205/ε, 163.27, οὐκούρημεν, 31, λόγος, 364.5, σονιπειν, σλακητή, 20, πατέτασσις θεραπευτική.

თარჯე. 167. 4. ღმბ. 13, მოლაპარაკ. 14, ფილა. 31, რ. ხ. მიმართ

L I B R . Q V I N T Y S.

LIBER SEXTVS.

372, vers. quartus huius incipit χω δι. λια, etc. octauus καὶ ἄτο, etc. decimus. καὶ ιπαρι, &c. nonus ἀλλ, &c. decimus. τίς εἰς, &c. duodecimus ινει ἀτο, &c. 373. 7, in marg. πρόθισις. 19, πέντε αὐτο. 374. 31, περιβάλλεται. 377. 5, συγιανέται ιμιγαλόσαναι. 18, ἀπάντηται. 19, ινδικεισις 39, θρυσθήσαρ. 378. 30, πατιβίναρ. 35, περιφέρεισι. 379. 10, περιείσιν. 19, βινθίσιν. 21, ἀσύνταχτοις. 12, φίσας. 39, λειχέναρ. 46, in marg. οειμίδες. 49. θεύθερηι. 80. 27, βορβορέσσατο. 381. 40, ωσα. 43, ιπιρποιθόσαν. 51, ιγναθαρο. 52, ξύμετη. 400. 33, κιλτῶν. 403. 13, ουμβάλλ. 43, ολλάς. 44, οπη-πέρ. 48, δ. οσ. 49, μιγάλορ ιγεμα. 52, χαρίταναι. 405. 10, ιπαντρούν. 24, επότι. 406. 4, καλογιγάτη. 24, διη. 407. 27, ούτιβετο.

LIBER SEPTIMVS.

410-410, χάριτη 411.11, σπυρόλιώ.25, θεργολιόνθ.415.12, ή 46, δ. μήλα.416.19, σε πνοήματα @ σύλλαμβάνεται @.417.6, πανταχός.23, φρούριο, συντριψτικά.418.23, αδικτέλειρο.27, σχερίζεται.419.5, άδει.420.21, πανημένηθ.421.28, ποιμένι.47, λιστρό χριστό.423.17, μικρόν το σύργιτκον 424.16, τι, καὶ 8cc.45, προπληρ.46, αξιωμ.425.42, βραχύ.426.46, γαλαπέτιον.427.17, μαθημάτων.31, πελλάν.428.30, διαμάνηρ.429.13, βήσηρ.45 ήν ο.43.7, οποικτι.29, τι @.ibid.γράκοντετηται.432.11, ίση.22, γλυ.27, δ. δι.434.16, σπυρόλιστατη.435.11, προβιμόταται.35, τέτο σφίσ.42, σινίστη 436.41, αδειμνον.49, σονινιστιται άδειται.437.6, ηραίτεκα.11, ιγαπάη.39, υρφέμιον.441.41, ούτου χάρ.444.13, άλειρ.43, πακαγιάθεται.448.15 γίνεται.20, παρ.35, συγκαταφέσιον.453.29, λίτημιται.453.37, φιλοσοφιπάτ.455.21, ιπικέται.457.41, λιγάτηται.459.41, ή παρ. θίλφερκ.460.32, παλαιοτίρεται.461.44, ή δέρ θύρεται.465.19, αιδιοτίμη.468.16, μιγάλα.40, μηργαντινόπολη.469.48, ιφελέται.471.27, σύγκαμινη.473.4, οδχήσ.8, ιστεβλισται.45, ίχοιαι.474.33, ή ή.475.10, μηργαντινόται.14, θύτασμάται.17, σιντέρ @.482.20, σύνοιηται.

L I B E R O C T A V V S.

520.15, ἵψηντάμενοι, 521.7, καρπάκια, 11, αὐθίστηταις 523.27, μεταμετώπ. 525.1, συνέπεταις, 47, διανυόμεν. 526.36, γλυκερία, 530.37, in marg. 14 πρύτην, 533.49, in marg. a, φίλιας απόστολος, 536.2, πιθανότητας, 24, in marg. διάσποδαι.

ERRATA LATINI CONTEXTVS. LIBER PRIMVS.

Pag. ucrf. 3. Palæologo. 2. 5. in margine. Mustaphæ. 8. Autistum. 34. pro fatus. lege. pactus. 4. 40. callacuzenam. 5. 30. Preibaf. 7. 3. Ratae. 10. referetur. 41. lanizarum. 10. 9. delat. 17. porta. 10. indicio. 25. pro ucl. lege. nil. 12. 4. 4. potum. 14. 1. in marg. adde. & in Ponto. 16. 38. propensiōne 17. 29. in marg. 11. lñdorū. 19. 3. in marg. a. Filii. 15. in marg. a. Filii eius. 20. 12. ille. 21. 16. Amerutdam. 21. 14. Metropolitarum. 25. 32. in marg. intita. 18. 15. precatiōne. 31. 36. Malonias. 34. 45. peditans. 35. 5. simus. 6. capitanius. 36. 30. marius. 37. 10. percutiāre. 43. 51. catrigens.

THEODOS. ZYGM. EPISTOLA.

Dag.74. Titulus ab inscriptione Epistole distinguuntur. Ab initio τῆς ἱστορίας hæc herba omitti, M. Mattino Crisio, 75.49, lege, triginta annis generationem definire; Sicut Nestor, 76; 17, cæsorum, 77.1, acerbiorem, 31, lingues, 1, liturgias, 43, in marg, ergo, 49, illam, 78.47, coronam militari, 79.50, mendicando, item, querentium, 80.42, existimabant, 81.30, p. ut, 1, aut 83.12, liberet, 13, propensitatem, 2.4, liberet, 83.61, reuati, 56, tantum cohuestandis, 49, in marg, 2. pf, 73, & 82, 89.7, urbem, 41, persecutarentur, 90.33, p. missa, 1, misera, 91.29, miserijs, 36, duxi, 47, nominentur, 91.3, Domini, 31, Relicio, 93.3, X X X V I annos Turca, 95.13, eas, 16, Hymenius, 21, p. plurimi, 1, Flaminia, 96.47, orationis, sol, 97, in tit, pro, Turcogratig, Liber, 1, pone, De Constanti, periculis & clad, b. uer, 3, p. locum, 1, lotum, 21, Descendit, 49, Praconem, 50, bonatum, sol, 98, in tit, p. Historie politie, ex, pone, Theod, Zygofiliae Epistola, 4, p. morum, 1, niormum,

LIBER SECUNDVS.

Pag.107.vers.35,creahdi dedit, dicens.111.31, genitum.114.45, naturę.116.3, creditus quoddo, &c. Fol.119, Operarię incuria eiusdem formę chas
radetibus & Scholarij uestra & Achumazę uerio excusa, hinc.122.7, ducentiam.123.35, obtutum.124.29, uero.125.59, Q[uo]d.126.39, reposcente.
127.11, indicium.128.7, habebat, ei inuidit, 129.11q[ue] 130.28, iurijurando, 38, pernigando, & sanctissime.130.43, quidam.134.44, tale renunciate.140.
3, insinuauit serut.143.27, Chriſti, summi Pontificis.37, in marg. Ecce.145.7, de Patriarchejo.149.39, spretis p[ro]p[ri]etatis.150.10, autore & approbatore.24, pro-
ductrix.46, resipiscientib[us].151.18, ita uehementer.15, diuiniſti, ad modum.155.19, Ebraimo.157.20, lacrymis ascendit.27, reperiantur Ecclesiast.158.40,
tum à principibus.160.30, Ego, inquit, mi.161.35, que.38, nobilisq[ue] suis.43, oppugnationem, ip[s]e, nos.163.15, Litanejja.17, glorioſissimam.41,
diuersi.167.20, denuntiarunt.36, uero.170.36, semper artus capit.34, corruptorem.171.37, nullcrem.173.3, in marg. Sionii.1.11, doni.24, in marg.12
Act.8.176.15, Dominica, post Nicomedie.177.3, talis.5, milius.20, indicium.43, canentem.178.10, octogesimo, tertio.27, post, accepit, omisla sunt hec
uerba, omnesq[ue] potestate & ius, in omnes plas utriusq[ue] ordinis, sacri &.179.31, p. Diaconus.1, Dicimus.44, prodidit.180.32, Hoc.181.36, polito.183.
26, sua ad precium.

factus, 39, p. 2, l. 1, 218, 13, postrem & uerum, 219, 47,

S B C V N D A P A R S.

7, nec minus. q, Gratulor, 249. 2

P A R S T E R T I A.
369.33. reliquias.370.1.0. Domum.

269.33, reliquiae, 270.10, Domum.
I. I. H. E. B. 8

Liber Quartus.
mochachos: 30. formare: statantibus: 34. in

Pag. 179, verf. 21. Medici, 280. despote, 289, 19. Hieromonachos, 30. in marg. graianter, 34. in marg. decessis, 183. 29. et in, 295. 16. uolunt, 298.
22. in marg. Scripti, 301. 4. in quo, 5. prætexentes, 10. ut id sicut, 34. in marg. a. X V I I I . ex ins. Patmo, 302. 16. Regum, 303. 7. precamur, 46.
habetas, 306. 19. Philosopho, 26. illius, 307. 18. mibi scriptisti, 315. 19. præsentis, 30. acquiescenti, 43. scripto, 316. 31. in marg. auxilium, 39. meam, 319. 29.
magis magisq, 310. 36. Regum, 321. 41. Is. 323. 22. uolantate, 324. 10. cognatio, 325. 7. donum, 328. 45. p. suos, l. uos, 330. 33. sororius eius, 331b. 332. 25.
aliquantulum, 333. 42. uas, 334. 36. in marg. Varns, 343. 34. whate.

L I B E R Q V I N T U S.

LIBR. S B X T. V. S.

LIBRARY S. B. X. P. Y. S.

417.24.p. Non.1. Nunc.418.1. non ita emittere.419. 14. abiit.420.16. Dabat.20. Iteatis.431.52. noluerunt.433.28. gratiop.30. et nunc.47. efflo-
xuerunt.444.43. quidam.445.44.p. &c. 1. quod.448.26. optimè.452.48. exterofitum.51. alicutus.453. 16. omnem exilium humilitatem. 453. 31.
Alteritum.459.4. in marg. πιπίτης.461.43. p. Tertius.1. Totius.462.3. profici' cere.19. habent.49. p. tēpore.1. proper.464.14. Cancellatio nostro,
adhuc.465.41. Ecclesiasta.466.30. Sanctitati.35. placeant.468.12. ualculū.14.p. &c. 1. at.470.19. solo igne.43. cōsolidauerit.471.52. quae præparatio-
norum. ibid. quod uitæ confundenda. etc. 481.17. fauabunt.483.5. in marg. quæ qd.

L I B R E R O C T A V V S.

522.45, gratiam, 531.16, dixi, monstrauit quo possitit, etc., 532.36, tul. 533.10, dolere, 534.29, Gracis) 535. 28, caruerim, 37, aspergit, 536.32, in aucto, de-
monatur & regione eius.

CORRIGENDA IN ANNOTATIONIBVS
LIBRI PRIMI.

Pag. 44 verf. 12, *Archetypum patre*, ibid. 40, *μηχάνη βροτών* 45. 11, *κατέβασις* 42, *interventus* 46. 9, *κατάπληξις* 10, *κατεύθυνσις* 11, *πολυκάρτητη* 47. 6, *τριάντα* 1300. 48. 11, *χαλίκια*.
47 μηχάνη 49. 19, *hac: 36, πιπεριά* 58, 13. 30. 27, *habitatus* *situs* *pactum* *in* *valle*, *pactum* *in* *proximorio* 41, *laconia* 52. 1, *apertus* 15, *Turcica* 37, *Ducem* 53. 33, *p. tib. L. tib.* 45, *μέχρι* 56, *διάλει* 54. 37, *esse* *Ioan.* *scilicet* 43, *τεταύρων* 150, *Interventus* 51, *Χαροπα* 55. 42, *συγειαχεῖο*. Item *coniunctum*, *καμάρα* 47, *defectum* 56, *minore*, *Interventus*, *etcatem*, *alios deficere*, 56. 26, *occupantia*, 57. 22, *qui* *in* *papalista*, *item* *praevidens*, *item p.* V R, 1. 12. 42, 1454. 45, *Diplouatazis* 58. 28, *τέ Hexamilion* 4, *in* *margine* *poni* *dehebat*, 45, *Leshi*, 59. 1, *Lcsbi*, 59. 17, *λαζαρία* 22, 1439. 52, *ισθμοῦ* 60. 6, *Τριανταφύλλου* *principi*: *qui* *to*, *Sophia: Ioanni* 43, *Mirogrelia* 44, *Batonibus*, 61. 18, *gladijs*, 62. 4, *(ab Aequis)*, 12, *in* *marg.* *Laomico*, 10, *Christi*, *Officium* 28, *Rhode*: *&c* *vidit* 39, *εγκατ.* 63. 52, *ηπειρος*, 56, *inde* *in* *Siciliam*, 64. 39, *τετράβυρχη*, 41. 567, 44, *Soltaninis*, 65. 5, *Alcatrum*, 23, *Sophianos*, 17, *parentibus*.

B P I S T. T H. Z Y G O M A L E.
99.7, isoptera. 8, πίμφας. 20, χρυσό. 29, θάμνοι. 53, θάλασσα. 6, δέκατη. 18, τύπος κριτών. 32, μερικά. 33, p. χρήσι. 1. χ. 157. 101. 5, 1452. 26, corenam 30, Tamerlan. 45, responsum. 102. 19, adiecit. 47, βιορ. 103. 6, Turingiae. 8, αιγαν. 11, Αιγανούτερ. 30, ήρωες. 104. 12, συγκέχυμα.

LIBRI SECUNDI

Pag. 185, l. 6, De Malaxo, 186, 37, Cæsarinus, 187, 5, Dolithenus, 13, Ladislae, Vngaritæ, 43, Xerpi, 45, Myschæti, 188, 16, post solium: omitti sunt haec
uerba, ne fignatur, pro ræfænu, narrare. à laetitia, à obvicia satiū, 46, peplū seu ealantia, 53, frægætæla, 189, 50, à Græcis, 191, 50, pro t, repone
193, 22, nœptiū, 23, Ætius, 196, 25, Mæthiæ, 197, 26, træghorða, 198, 5, Bæstæ, 198, 11, iætæpæ, 39, mœsi bæfæ, 43, xamænnaþ, 47, iætæsæs, 59, portæ.
90, cañente 199, 7, ad Mahomætæm, 19, quæ tamen dñiæm, 39, miæxumætætor, 200, 15, recensit, 38, ðætæm, 205, 36, quid in illis, 206. Titulus hic esse
debet: In historiam Ecclesiasticam, sic & in sequentias, 208, 12, noſtæwæ, 18, uilens, 31, miæmætæ, 209, 12, Cyprica militaria, 210, 39, pænætæ, 211,
29, sc. 55, portas.

TERTII LIBRI PARS PRIMA.

Pag. 219. uers. 11. σίσυφα λιμένε. 122. 18. χαράγματα. 131. 14. Alexandri Macedonis. 25. parasangas. 30. statis. 35. σιγγράπται. 36. τύποις. 42. Veneta. 46. Nec diu polt. 52. Veneris. 232. 4. Nauplium. 19. Soldani. 26. valida: turres. 45. Corcyra Methoneum. 46. In margine dicitur, Corcyra. 233. 2. 31. 234. 42. Templo. 235. 21. inscriptio. 24. Ottoman. 27. Synceret. 35. 15. ικανός χριστός 79. 41. στήλ. 236. 5. p. +. reponit. + +
P A R S S B C V N D A. + +

P A R S S E C U N D A.

⁴ 241.30, πυγμάνιος 43.41, παρτικληματικός 149.49, σcripferit 152.40, αρχιπελεύς 153.21, καθετήσεις 364.28, Dolscij, 19, confessionis.

P A R S T E R T I A.

273.31. *Scoenophylax*. 48, πλευρή, 276, 20, πίρηγα, 37, status 7. Novemb, etc.

QVARTI LIBRI.

Page 289, margin. 45, συγκατικό, 290, 6, ἀγορά, 7, ἀγορά, 292, 52, πάνου, 296, 17, ipsam, bina, 23, p. v i γ α: l. Ήν γ δίτεμ p. x. l. n' 297, 21, maiusculis 4
Η ΛΑΝΑΤΑΣΙΚ ΤΟΥ ΚΥ ΙΜΩΝ ΙΥ ΧΥ ΤΗΣ ΑΓΙΑΣ ΠΘΛΕΩΣ ΣΙΕΡΟΚΟΛΥΜΩΝ.
22, ἵρτιμο, 23, Getsemane 293, 15, καθηρά, 300, 41, Patriarche, 301, 27, Khodus inf. 29, in marg. d, Ex inf. patimo, 302, 38, Extra, ibid, ιωάννην, 308,
14, p. 31, l. aut. 309, 18, λάσπαρις, 12, πατριπέχαιμ, 22, ἰχθύνη, 311, 13, conjecturis, 314, 6, γηλιαδη, 7, in marg. d, commendatio animi, 317, 4,
paginaico iudicio: iuc. 6, στήνωντο, Μαρθαμα, 318, 36, Ηιαδ, 21, 319, l. Αίκαρ, 4, Συζι, 321, 14, ἀρχεντίσκε, 15, σύλογοντο, 16, καρποφύτε, 18, θύρα
τηρη, 324, 29, Ιερα: Ιερη, 325, 40, in marg. Metropolis, 42, πρωτεπατάμ, 327, 5, d, τε πολυχρόνοι lege πολυχρόνοι, 328, 3, θήρατος, ibid, ιακώ
λαοδο, 5, Nicrum, 13, in uīs, 328, 49, in marg. a. Hic iterum præcedens ligilium ut typō impressum, fine cera, 51, θετε, 52, p. ueritates, l, diuine uirtutes
329, 52, ἰχθύεω, 331, 11, ἀνθρωπίο, 332, 5, 1075, 333, 17, in marg. Mons S. seu Athos, 20, πατίμη, 23, quotannis Talerorum.

LIBRI SEXTI

372. 15. ἀρροφόρος. 27. εἰπεν. 70. 384. 25. & igne absumpt. 37. οὐεροκρύπτε. 38. inquit. 385. 35. obijcens. 37. gerentem. 54. in marg. abscondit. 387. 53. armis. 388. 14. bellis pacificis. 24. iam. 389. 13. serius. ibid. præbere. 390. 31. ἀρχαι. 33. τακτικαι. 393. in marg. ſea. 47. natricem. 51. καταδίλιν. 394. 1. piercer. 10. κι. μ. 395. 13. πτιζόμεναι. 396. 16. ιπάμημ. 23. προκατάληψις. 54. d. bene habuisse 55. orationis bene habuisse præsentim. etc. 56. ατματ. 396. 41. negatio: tu: illima. ibid. αγνώστι. 397. 33. ιρεθικά. 43. τραχικε. τυρπάμειδε) Valde. eto. 50. ex Id. 389. 37. Coedcine. Landabilius. etc. ibid. παλιπεργία. significans & cædium lectori. etc. 399. 5. habentus. Nobis. etc. 43. ueretur. 32. ίμετο.

LIBRI SEPTIMI.

484-48. Melanchthon, 485, 24, iniunimus, 486, 23, ab, 52, Patriarchatus, 487, 13, nolunt, 488, 10, proposueram, 14, i p 78, 43, τύς αὐτής, ἡ τὰ, 490, 5, p, particula, l, pericula, 17, conciliant, 51, κατεχόμενος, 492, 1, dīcere, 494, 7, qui pugnam, ibid, p, aures, 1, aues, 9, p, sinū, tibi, 16, p, nihil, l, nisi, 40, ueniet, 496, 36, οὐσία, 1, p, ibid, μάτηρ, 38, θυγατρία, 40, θυγέτρια, 43, η μητρ, 48, 2125, 49, īdītūm, 498, 30, Epigramma, 499, 11, μάτηρ, 500, 56, in marg, a, D, Ioan, Suarezius, 502, 14, p, lumen, l, Lumen, 52, Metropoles, 503, 7, ferē, 504, 30, ἀδηπανθ, 37, ferē, 505, 43, hilarem, 505, 49, χαλαρία, 506, 10, φυτ, 507, 10, πάκτυς αύτης 22, σκληρίας, 509, 55, αὐτή, 512, 22, Carinthiorum, 514, 4, duxisse, ibid, ταῦπην, 514, 10, ιυτύχητι, ibid, i p, 14, ταῦπην, 514, 15, ἀκαθηκίας.

LIBRI OCTAVI.

519,36, p,precisiones,l,Significaciones,528,33, in mat,espacio,529,32,p,forma,l,fama,43,fabricatorc,530,7, M E A I T E N, 25, parte,528,32

HACTENVS ERRATA.

Imperatorum Constantinopol. habitus priscus.



ΠΑΝΕΠΙΣΤΗΜΙΟ ΙΩΑΝΝΙΝΩΝ
ΤΟΜΕΑΣ ΦΙΛΟΣΟΦΙΑΣ
ΔΙΕΤΟΥΝΤΗΣ: ΑΝ. ΚΑΘΗΓΗΤΗΣ ΚΩΝΣΤΑΝΤΙΝΟΣ Θ. ΠΕΤΡΟΥ



ΙΣΤΟΡΙΑ ΠΟΛΙΤΙΚΗ ΚΩΝΣΤΑΝΤΙΝΟΥΠΟΛΕΩΣ,
ΕΤΟΥ 1815.

HISTORIA POLI-
TICA CONSTANTINOPOLEOS,
à C. CCCXCI. usque ad C. I.
LXXIX. annum Christi: Latina à MAR-
TINO Crusio Tubing Professore, facta.

α. Β

Αστλάνδονι^Θ τῆς Κωνσταντίνου πόλεως, ἡ Βασιλέως ρωμαιῶν, κυρία Μακρύγιλλη παλαιολόγχη, καπὲ τὸ ἔξαντρον τοῦ στρατοπέδου τοῦ οἴκου, η μὲν σημαντικὴ

β'. πόλεως ταύτης, ἡ λεπτή^Θ: ἡ οὖτη Αγαρινῶν, η οὐκ ξανθὴ ἐπωληθύνειος κεραμαστική, οἵτις οἶδε θεός. Ὁ δεινὸς ὁ κυριότατος θεός^Θ, Βασιλεὺς σεβόμενος^Θ, διῆμεν εἰκόνει, εἰς ταλάντων κατὰ Φυγεῖν, ζεῖη θύειαι^Θ πάπα, καὶ τὸ ἔκει δέχοντας^Θ λαβεῖν τινὰ Σοφίαν, καὶ διποδίωξαι τὸ ἐλαύσομενον, καὶ τοσφορώμενον κακόν. Απελθεῖν τὸ Βαλόμενος; ἀφῆκε τοποθετῶν αὐτὸν, τὸ κύριον ιωάννην, τὸ

γ'. αἷς Φιόναν αὐτὸν δητὸν πατέρα οὐκέτι κανεὶς πάπα^Θ εἶνετο Φιλωσε: Διὸ τὸ νεωτερῆσα, καὶ τὸ περιέχει πολλὰ κακοποιῆσαι: σωμοπαῖδες οὐ καὶ οὐμενοὶ κατοικούμενοι Μαγοῖς τζελεπίνες, καὶ τὸ συλτάνης ἀγαριών: οὐ καὶ οὐρούσαις συλληφθέντες, τοῖς αὐτοῖς σύνεχόμενοι, διδοῦ^Θ πατέρα ἀπίκεινε: πιμαρήσαμεν^Θ, καὶ τὸν πατέρα τοῦ ποιητοῦ τῆς τόλμης.

τῆς τόλμης.
Καπιτολίου οὐ μὲν βασιλέως ἔτι,
καὶ εἰς ἵπελίαν ἀπελθότου, καὶ πολλὰ σῆματά
του: τὸ σέργειο μὲν αὐτῷ ὅτε πάπας, καὶ εἰ
λοιπὸι. Μύεναι Βοϊδας: σύχειδας δέ, ὡς Θ
δ'. πέλει εἵδε: πεφασιοῦμενοι, ὅτι ὁ βασι-
λοῦς γάτος, ἐν μίᾳ τῶν ἑορτῶν καὶ καπεδέζατο
πεφοκιασθομένοι τὸ ἴστορματικόν μεξιᾶς τοῦ χω-
ρεποσκέπτη: οὐ φαντῶς ἐπανω περιμένενοι τῷ
εἰκάνατζειτζ. ὅφειν ὁ πάπας λαβῆς τυχάμη, ἔ-
γραψε πᾶσι τοῖς ἵπελοῖς: βασιλεῖ βαμαίων,
μη καταδεξαμένω πεφοκιασθομένοι τῷρε εἰκό-
να γειτζ; ὅτις Βοηθήσει, ἔσαι ἀσυγχώρητο.
πλαστας δέ εἰναιτούμενοι Θ, ο μεγάλας τρε
φόμεν Θ πάγις ἐλπίσιμος, αὐτοῦ χώρησεν ἐξ αὐτοῦ
καὶ εἰς Βενετίαν πεφοεδράμενος: Διαπέραζάμε-
νο Θ γόδειν, ὡς χάρημι κατῆλθε καὶ εἰδεῖθη, ο
χριστιανιώπει Θ γάτη Θ βασιλέως:

έ. Εμ τάτοις σφέσιν ουκ, καὶ ἀκόσαν ου, ὅπε-
τε λόγιον ὁ σύλται μεχεμέτης, ὁ πός σύλ-
ται μπογιαζίται τὸν ιλτερήν: καὶ ἔλαβε τὰ
ἰγεινοῖαν

Mperante apud Constantinopolitanos; Romano Rege Manuolo Paleologo (qui iūc annus Mūdi, sexies millesimus & nongentesimus erat) urbis huius vires diminutae erant: Agarenorum autem potentia, nescio quo Dei iudicio, subinde in maius cresebat. Quapropter ille Rex, opis indigens, ad Italiam sibi configendiū iudicauit: & Pontificem maximū, Italosq; Principes, auxilijs alius curus, ad malum aduentās, quod praevidebatur, propulsandum, impetrādi causa appellandos. Cūm itaq; profectionem adornaret: loco suo interea imperio gubernatore reliquit Ioānem, suum ē fratre nepotem. Cuius patrem Andronicū avus cecauerat: quidē nouis rebus studens; passim finitimiis locis damna intulisset: ad id cornite sociog; usus Musa Zelope, Agarenorum Regis filio: quem itē pater suus; ut pariū facinorū reū, comprehensum, de sua scepta audacia puniens, interfecerat.

Cum igitur Imperator Manuelus, naue cōscensā in Italiā peruenisset: de subsidioq. māgnopere sollicitasset: promisit quidem id ei Pōtīfex, ceteriq. Proceres: sed p̄sūtū nō fuit; sicut exitus declarauit. Causa p̄tēxebatur; Manuelum die quodam festo, venerationē imaginis crucifixi Christi, in dexterā manica Chōrepiscopi intextae, recusasse. Vnde causa Pōtīfex arrepta, Italī omnib. scripsit: qui cūq. Imperatori Graco s qui noluisse et imaginē christi adorare, auxiliū ferret: cū à sacrorū cōmūnione, sine venia exclusum iri. Quibus ille auditus, qui magnasse passus fuerat: ab eis discessit, Venetiisq. cucurrit. Sed nec ibi quicquā eorum impetravit, ob que uenerat, quē necessitate compulsus petiuerat, Christianē pietati deditissimus Imperator.

Cum in his esset audito, mortuum esse Res Amurates
gem (Sultanū vocans) Mechmetā: qui Baia- II. Turc.
zita, cognomēto Illirimo, natus erat: illiq. in Rex.
1419.

a Regno sue-

mp. Con-
stantinopo.
Emmanuel,
1391.

Græci im-
perij decre
mentum.

Ab Italio o-
pem ille cō
trā Turcas
peuit; sed
frustra, pro
pter pape-
sanicam.

Amurates
IL Turc.
Rex.
1419.

Historiæ Turcogræciæ

πρεμενίαν ὁ τύτχος συλτανὸς μυρσίτης, ὃς εἶχε καὶ ἀδελφὸν Μυσταφᾶν: αἰτήθε, καὶ τὸν Κωνσταντίνην, ἀπέκλεψεν ἡ ἄριν κατῆλθε, κατέλαφε.

Συνεβηθὲ, ὅπι μυσταφᾶς ἦτορ ἐφυγε, καὶ εἰπλέψεν δούλης πόλεως: καὶ πάσεδέξαντο ἀστασίως οἱ ἐν τῇ πόλει: καὶ σφέδωναν αὐτῷ τῷ ιδίῳ γυναικαν, τὸν θυματέοντα. Ἐντέβελα, οὐ γε τὸν τίνος Γενύθητα: ἥτις διὸ ἐγγένητο Ἐβασιλέως τύτχος Μανυὴλ. ἢ γὰρ σὺν πορνείᾳ αὐτῷ θυγατῆρα Ζαμπία, ἔτεχεν αὐτῷ: σύμμαχον θεόν τὸ Ντέρια τύτχον, γυναικαν Βασιλικην. Σύνορασην δὲ ταῦτα, πλενόμενον ποιησαντες, κυρρὸν τῆς αιαζολῆς, ξένων ἐνόμαστη, καὶ ἀθλίων. Διὸ περδούσαντες χρῖστὸν σινι Βυζαντίου ἐν αἰαζολῇ, μὲν τραβισθῶν τοὺς σφραγίδας, ὑπέκυψαν αὐτῷ πολλοῖς: καὶ κάτροι καὶ χαρακαῖς ἔλαβε, καὶ ἐκαθέζετο ἐν τῇ περίστῃ. Πληροφορηθεὶς δὲ ταῦτα ὁ τύτχος ἀδελφὸς, συλλαλήσας θυγατῆραν τοῖς βυζαντίοις, καὶ ἐκάκη ταντοιοτέρας: καὶ δεκάτην ἀρτάζωντα λεηλατήσας, οὐσα ἐμειναντί, καὶ ἤσπει τὸν ἀθλίαν πόλεων. Παρακαθήμενος δὲ ἐμεινε πριεῖται, ὡς θυρέον στενὸν, μὴ ἀμελῶντα καταδιώκειν. ὅμως ἐστὶν ποιησαντὸν ἡδωνῆδη. λοιπὸν δὲ, λοιμῷ καὶ λιμῷ περιποιήσαντο πατέρων θερητούσαν πόλεμον, καὶ εἰρωλίων ἐποίησαντο. Εσωθήκας καὶ ὄρκες: οὐ μη πορθῆναι ποτε κατὰ τὸν πόλεων.

Τύτχον δὲ ἔτεις ὅθιωριέπελθοντος καὶ ὁ Βασιλεὺς ὑπος, ὁ Μανυὴλ ὁ παλεολόγος: Βασιλεύσας ἦτη, ὡς λέγεται, ἐκθετιπέντε: καὶ φαίνεται τὸν Βασιλέαν τῷ καὶ αὐτῷ, κυρρῷ Ιωάννῃ τῷ παλεολόγῳ. ὃς ἐχωμένη γυναικαν πλεύσαντος ἀπὸ λαμπταρδίας, ἐδόλωσε, ἡγάπησεν αὐτῷ, ἀλλασσώντος καὶ περισσέχων. Οὐθενὸς δὲ τὸν ἴδιον ἐπαλινδρόμησε πατέρος: καὶ ἔτος, ὡς Φυγύσαν παρὰ Βασιλέως, ὅλως ὡς ἐδειχθεὶς φιλικῶς σὸν ἀπόδεξαντο. λεῖψας δὲ τὸν Βασιλέαν ὁ πατέρος αὐτῆς πολλὰ, ὡς ἐλέγετο. Οὐθενὸς δὲ τὸν Βασιλέαν ἐφρόντισεν: αὐτὸς δὲ λιγύωρως εἶχε.

Βασιλέων δέ ὁ ἥρθεις συλλαλήσας Μυρσίτης, καὶ τοῖς ὄρκεσις ἐμμένων, καὶ ὡντὸν ὁ ἀδελφὸν πολλήν, καὶ Βεληθεὶς σράζεσσαν κατὰ Θεοφαλονίκης: καὶ αἰξιωθεὶς παρὰ τὸν Βασιλέαν τύτχον Ιωάννην παλαιολόγον; παντερημένη τὸν κατέτης Θεοφαλονί-

Regno successisse filium Muratam: cui frater erat, nomine Mustaphias: à peregrinatione illa Constantinopolim, nihil oram consecutus, propter quæ exiuerat, rediit.

Veneratus hic Mustaphas, profugus, in eundem urbem ibi, benignè exceptus fuit: cui etiam in matrimonium data est cuiusdam ex nobili familia Genitacium Aurianum filia, nuptis Regis Manuela. Huic enim Auriae nupta erat de voluntate Regis, spuria huius filia, nomine Zampida, mater illius sponsæ. Quo inani conjugio facto: eam appellauit Dominam Oriëtis, nomine in usitato inauspicato. Nam cum Byzantini Mustapham, exercitu & satellitibus comitatum, in orientem traduxissent: multi quidē se ad ciuius ductum applicauerunt: ipseq; complura castra & oppida cepit: ingrediuitate Prusa consedit. Sed his cognitis, frater eius Murata, occulte à Callipoli, in Asiam traiectus, Prusam peruenit: ubi Mustapham, in balneo Iamantem, vino & delicis languente, repentinō aduentu oppressum suffocauit. Hoc modo, occidētis orientisq; dominatū adeptus fuit. Infensus autē Byzantinis, quibuscunq; potuit, maleficijs affecit: nullo die pratermissō, quo non rapinas prædasq; circum circa agebat, ex misera urbis, quæ parva restabant, reliquijs. Eam etiam triennium obsidens, ad ferocis bellue instar, nullum insulatum ad expugnandum sibi reliquum fecit: nihil tamē effecit. Tandem enim, sublati pestilentia & famine utring multis, bello finis, pace & fædere iure iurando firmatis, nunquam amplius urbe oppugnatum iri, factus est.

Hoc rerum statu ita se habente: finem etiā viuendi, Imperator Manetus Paleologus fecit: postquam imperio, ut fertur, annos vigintiquinq; præfuisse: reliquo successore, filio Ioanne. Habebat hic diuitem uxorem ex Insubria: sed amoribus aliarum deditus, prorsus non amat hanc. Indignata itaque, ad patrem suum rediit: qui, ut à Rege fugiuam, minimè ea charitate, quæ debuit, exceperit. Dicebatur autem, ipsum etiam multum meretricijs amorib. indulgere. Quæ causa fuit, ut suos liberos curare non babuerit.

Cum ita, ut diximus, regnaret Murata: & in fædere Græcorum maneret: atque Adrianopoli vivens, expeditionem adversus Thessalonicanam agitaret: rogatus fuit ab imperatore Ioanne: desisteret à bello Thessalonici.

Fratris eius
Mustaphas
coniugium
cum Auria
112.

Amurates,
Mustapha
interfecto,
Græcis in-
festus.

Ioan. Pale-
logus, Imp.
1421.

γεωγαλονίκης πολέμου, ἀπεκρίνατο. ὅπ; εἰ μοι τοῦ θρόνου, ὡς Φίλε, τῆς Βασιλείας συνῶντο παγκύριον: σὺν αὐτῷ πορθέθηκεν. ἐπεὶ δὲ οὐτῷ τῷ θεοῦ Θεοτίκῳ πορθόμαι κατ' αὐτῆς ὅπως, ἵνα τὸ δέλτη, προθήσωμεν δύλωσόμαι ταῦτα. Τοῦ θρόνου δὲ αὐτῷ τῷ πορθέθηκεν τῷ θεοτίκῳ: ὡς ταῦτα ἀπεριπλήσιος αὐτὸν γίγαντας, οὐδὲ Μαντήλης παλαιολόγος: ὃς ἔσχεν γὰς εἶχεν, ιωαννίων, θεοστόρου, Κανταντίου, αὐδρόνικου, Δημητρίου, καὶ Θωμαῖ. πᾶσι δέ δώκει τὸ πάτριον τοῦ Διαπροφίλεων. Οὐδὲν δὲ τῶν θυσίων χειρὸν θεοτίκῳ τῷ γεωγαλονίκῳ. ὃς πεσὼν τῷ πάθεῳ τῆς ἐλεφαντίασεως, ἐπάλησεν αὐτὸν τῷ πάθει φαῖται γεωγαλονίκης, Διερχόμενος διερχόμενος τοῖς κόλαξιν εὖδωρος αὐτοῦ, τοῖς μέτα αὐτοῦ: τὸ μὲν μείναντα λαβὼν, ἀπῆλθεν σὺ τοις μοναστεύοντος ἀγίοις ὄρεσσι: οὐδὲν δὲ τὸ ζῆν εἴξεμέτησεν.

Απελέγοντο δέ γε κατὰ τὸ γεωγαλονίκης σύλλογον Μυρεστάτην, καὶ τολμορχήσαντο αὐτὸν: σκυρέσθωσε τοῦτος πολέμων. ἀπέκτεινε δὲ τοῦ θρόνου Γερεικῶν, οἵτινες αὐτέσπονταί εἰσι: ὁλῶς περισκαρπτομένη Βυλγαρίας, τοῦτος πολλὰ τοις συγχρέτοις αὐτοῖς: Οἱ δὲ λαττίνοις οὐ φυγοῦντες, γυμνακῶν δίκλινος, ὀλίγοι οὐτες. ἐπειδὸν δὲ αὐτόχθονες γεωγαλονίκεις πολλὰ σύνταξαν: Φόνυς, αὐχμαλωσίας, τῶν δὲ πάπιας τοῦ πολέμου σκορπομόν, τῶν διπολιανῶν τῆς Φίλης πατερός, καὶ ἄλλα ὄμοια: Τηλφῶν ἀρχέσιν δητικεύεινται, τῷρις ἀσεβῶν, αὐτοῖς.

Δυλώσας δὲ καὶ μόνον γεωγαλονίκης: ἀλλὰ καὶ τὰς αθίξ αὐτοῖς, καὶ ἔτει τοῦ Σεπτεμβρίου σερβίας φημί, Βυλγαρίας τῆς γείτονος, καὶ ἄλλων πολλῶν (ώς θεῶν τοῦ θεοφράστην τοῦ σκοτώμαρτζινοῦ ήμαντ, καὶ ψυχενός οὐλήν) δικαίων λύοντος, ἀλλά ἐρήμους διώκοντος: καὶ πολεμώντων δὲ αὐτοῖς αὐτοῖς πολλαῖς, ἢ ὀλίγων πάνυκα διατενῶν) ἐπαῆλθεν, ἀλλακαταφαγεῖν μελετήσας, ὁ ἀρχειος θηρεός. Πληντῷ φαινομένων, ἐμεγενερείρεωσαν: τῷ δὲ ἀληθείᾳ καιρὸν αὐτοῖς θητῶν, καὶ πέροφασμάνα.

Ταῦτα δὲ πάσμοισι, ὁ βασίλευς σκοπῶν: πῶς δὲ τῆς αὐγαρ ἀρχειος, κύων ἐδύλλε τὰς πόλεις (τὰς μὲν διλόγους περιφάσεως, τὰς δὲ λόγοις κολακείας πλεύσιμον, ἀλλας δὲ ἐξ ἀρπαγῆς: παταλιδίου κινῶν, καὶ στολιθόμε-
promissis: alias; νιατῇ, oppresione: omnem lapidem, ut dici solet, mouens, nullum do-

Thessalonicensibus inferēdo. Cui ipse, si esset, inquit, illa ciuitas regno tuo subiecta: abstinerem, amice, hac expeditione. Quia uero ditionis Venetorum est: ibo cōtrā: &, Deo bene suuante, expugnatam, mihi subiūciam. Facta fuerat illa ante tempus, Venetorum iuris: vendita ipsis ab Andronico Paleologo, Manuela F. Habuiteq; hic sex filios: Ioannem, Theodorum, Constantimum, Andronicum, Demetrium & Thomam: quibus singularis certa loca, unde vitam sustentarent, assigauerunt. Infelici itaq; Andronico, Thessalonicā. Qui in lepram, quam elephantiasin vocant, delapsus, illam illustrem urbem quinquaginta milibus Aurorum vendidit. De quibus parte suis adulatoribus donata: cum reliquo in quoddam sancti montis Monasterium abiit: ubi vita cursum emensus, obiit.

Profectus cum exercitu Rex Murata, Thessalonicam oppugnauit, eamq; vi cepit: magno numero Gracorum occiso. Noluerant enim ullo modo ditionē facere, quamvis magna pollicito: sed ad extremum usq; spiritum restiterant. At Latini, qui numero paucis inerans, formarum modo clam auferuerunt. Acciderunt indigenis Thessalonicensibus multa grauiſſima: cades, captiuitates, in alia ex alijs loca vēditiones, charorum inter se distractiones, per Orientem Occidentemq; dispersiones, dulcieſ patrie amissio, & alia generis eiusdem: nullo crudelitatis genere ab impijs, seu ferociſſimis bestijs, pretermisso.

Redacta hoc modo in seruitutem non tantum Thessalonica: sed alijs passim oppidis (quo tempore annus mudi numerabatur sexies millesimus, nōgētesimus trigesimus septimus) Scruie, atq; vicinae Bulgariae, & aliarū Regionum multarum (Dei nimirum concessu, ob prūienda peccata nostra: cum, nemine prohibente, nemine armis resistente, nisi paucissimi, ijsq; infirmis, omni prēsidio deslituta desertaq; persequeretur) reuersus est: aliorum insuper deuorationem, insatiabilis fera, animo agitans. Attamen speciem quidem prabuit pacem colentis: re autem vera occasionem, & causam aliquam, quarebat.

Hec, & his similia Imperator cernens: quo modo immanis iste Agara ortus canis, urbes subigeret (quasdam, pretextu speciem habente: nonnullas, verbis latibus, & falsis

Filij Emauelis.

Thessalonici
ca per A-
muratē ex-
pugnatio.
1418.

λισύμενος : οὐδὲ μαζύφαγος, βαλόμενος) εἰς ελέουσι, ὅποις πορθότης) σὺν ιταλίᾳ : καὶ επικαγκάση γενέαδευ σῖωσι μετὰ λαϊ νωμένης ἔτοις λαβῖαι Βοηθαυμερικαῖς, καὶ τὸ ἀκαρητὸν διποδίωξη. Γερμανοὶ δὲ τὸν πάπα Εὐγένιον : ἐπερχεμένοι χαρᾶς συγκροτήσιναι τὸν : καὶ γενέαδευ τεράνων καὶ σῖωσι, εἰ διώνατο τὸν θεόντας θεαταῖς, ἐποιαζόμενοι. Οὐ μόνον δὲ ὁ πάπας, ἀλλὰ καὶ οἱ Καρδινάλιοι, καὶ ἄλλοι, ἐπερύμαντον σῖωσι κατορθωθεῖσι : αἱς πολλαῖσις Βασιλέων, κατορθωσαντων μὲν δέσμον, πολλῶν σκανδάλων αὖτα φυομένων. Διεμέλισσον δὲ οἱ Βασιλεῖς τοῖς δέχετεντο, καὶ τοῖς αὐδαῖσι, καὶ λόγῳ καὶ μαζηματῷ μετόχοις : καὶ ἡλθοῦ σὺν Κωνσταντινούπολει. ὁ τε τραπεζῆνος, μετὰ τὴν φιλοσόφων ἀμυράτη, ὁ νικαῖος Βησιακλων, ὁ ῥωστος, Γερμανὸς οὐ φιλόσοφος, οἱ ἄλλοι λογοθεῖσι. Καὶ σωάζεως γένο μοίης μετὰ τὸν αὐτοτελάρχον, καὶ εἰς ιωσήφ (οἱ καὶ σὺ Φλωρεντίος ἐπελέγοντος) παῦ λεῖχρογίας γενομένης σὺν τῷ μεγίστῳ ναῷ τῆς τὸν ἡλίγγης σοφίας : ἐμελέτησαν καὶ σκύρωσαν διποδίσαι : χειροτονήσαντες εξαρχούς τῆς οἰνδόν, μάρκου τοῦ Θηγενικού, τοῦ ἐφέσου μητροπολίτου. Κατελθόντες δὲ, καὶ σκέψῃ ἀπελθόντες, καὶ σωελάσσεις ποιήσαντες, καὶ διετίαν ὅλην συνδικατούσαντες : ἐποίησαν μὲν σῖωσι, ὡς τὸ περίκλικὸν τῆς σὺν Φλωρεντίος τούτης λεγομένης ὄγδόης λέγει : πέλατος ἡ γενεῖδεν : ὅλως τὸν ἐφέσον μὴ συνεδρῶσαντος, ἀλλὰ καὶ λογομαχίας καὶ αὐθις κινησαντων πολλῶν, ὅπερις τῷ Κωνσταντινοῦ ἐπανῆλθον. Ὁδεν δὲ ερμία εἶγεντο Βοήθεια : ἀλλὰ τῷ ὑλανένοργον καιρὸν τόσον.

Ἐπανελθόντων δὲ ἀπὸ ιταλίας ικατίλαι Βενού Βασιλεῖς τῷ εἰαντὸν φιλτάτων γυναικαῖς, μαρεῖσι τῷ καντακύζωντι σὸν σὺν ζωτικοῦ : ἀλλὰ τελεύτησον τῷ καιρῷ. Καὶ ἔτοις, ἔτη μὲν σὺν λύπῃ ίδε. Οἱ δὲ σὺν τῷ τόλμῃ καληρηκοῖ, ιερομόναχοι, ιερεῖς, ήγύμνικοι, τανικοῖ, καὶ οἱ λοιποί, σὸν ἡθελοντούσι τοῖς ἐλθόσι, ἢ μνημονοῦσαι αὐτὸις : ἀλλὰ ἐχωρίζοντο αὐτῶν, ὡς ἀσεβῶν, οὐ πέμποντο. Πολλοὶ δὲ ταρητῆσαντο καὶ τῷ ιερωσιών. Καὶ γέγονεν ἡ ἔνωσις, Διοίρεσις. Οὕτω δὴ θερομένων τῷ σύκλησιασικῶν, ὡς ἔτυχεν : καὶ μὴ ὅντος πατριαρχοῦ, Διοῖς τὸ τελεύτησαν σκέψῃ : ἀλλὰ μὲν τῷ θεοβι-

βαθῆ
re Ecclesiæ statu, ἢ πτυχαιοῖς τῷ patriarcha, Iosepho illic morito, nullus esset: nemo etiā, pro-

dolum omittens : semper aliquid denorare cupiens) de proficisciendo in Italiam consilium cepit: & constituendo, quamlibet difficiili cum Latinis, Religionis consensu: ut hoc modo aliquibus subsidijs comparatis, Agarenum propulsaret. Qua de re cūm ad Papam Eugenium scripsisset: huic res auditu iucunda fuit: de consilioq; conflando cogitauit: in quo una ex duabus cōcors Ecclesiæ efficieretur, si sieri posset. Itaq; & sumptus misit, nauesq; necessarias. Nec iāpātōdō, sed etiam Cardinales, & alij consensionis cupidi erant: quippe quam sepe tenzassent, sed nihil profecissent, miliarum offensionum incursu. Significauit igitur Imperator, ditionis sue principib; sacerdotib; , & viris studio literarum deditis, eruditionisq; laude præstantib; : qui Constantinopolim aduenientur. Horum precipui erant, Trapezuntius, philosophus Amyrutzia, Nicæe Bessario, Russie Isidorus, Gemistus Pletho Philosophus, & alij dilecti. Qui cūm ad sacrum faciendum, cum Patriarcha Iosepho (qui postea Florentiæ diem suum obiit) conuenissent: liturgia in maximo diuini Logi sapientiae templo peracta, nauigare inde decruerunt: Exarcho, seu Inceptore, synodi designato, Marco Eugenico, Ephesi Metropolita. Delati in Italiam, cūm ad Latinos venissent: post plures congressus, & integri bienniū moram, sanè unione, seu consensum, fecerunt: quemadmodum Aeta Florentine huius, quæ octava nominatur, synodi perhibent: sed exitu nullo bono: eò quod subscribere recusaret Ephesius: et verborū concertationes, postquam Constantinopolin rediissent, alias denuo multis sererent. Ea causa fuit nullius postea summissi auxiliū: sed Hylam, ut proverbio dicitur, tandem tempore clamauerant.

Postquā ex Italia domū reditū fuit: reperit Imperator suā, quā summè dilexerat, cōiugem, Mariā Contaczenā, nō amplius in viuis: sed ante tempus vita defunctam. Ita, hic quidem in luctu erat. Qui vero in urbe degebant Clerici, Hieromonachi, Sacerdotes, Abbates, confessionib; audiēdis prepositi (Pneumatici dicti) ac ceteri: iū nolebāt Liturgias et sacramē illis, que venerāt, celebrare: aut in precib; mētione ipsorum facere: sed ab eis recedebāt, tāquā qui plecta tē (ut ita dicit) abiécisset. Multi sacerdotio etiā renūtarunt: Deniq; unitate diuīsio, cōcordiā discordia, cōsecuta est. Ad hūc modū iactato teme Nullus Patriarcha.

De unione
Græcorum
& latinarū
in Cōcilio
Florentino
irrita.
1439.

Turba da-
mesticæ.

E.Y. ΔΥΔΙΚΗ
ΙΩΑΝΝΙΝΑ 2008

Turcogræciæ Liber I.

5

Βασιλεὺς μὴ θέλοντ^Θ ό Διά τὸ σκαῦδα-
λον (καὶ γὰρ ὅλον) ἔτος ἔμσημ πεπε-
ργυμένος. ὁ νικάτας σῆ^Θ Βησσαρίων, καὶ ὁ ῥώ-
σιας, ἐμπιναν ἐν τῷ ῥώμῃ. Καὶ ἐγένετο καὶ
καρδιάλι^Θ ὁ Βησσαρίων: οὐ μετ' αὐτῷ σύζητο
θεξάμεν^Θ, καὶ τὸ ἀσκανδάλισμα ἀπο-
ζόμεν^Θ.

Ηὑ δὲ ἐν Κωνσταντινούπολει τὸς ἀγιώπιτος
τονδύμαλικές, λεγόμεν^Θ Γρηγόριος^Θ. ἡ
μαρτύρησις τεκυ^Θ Σμερζλας δύκος. Α-
ρευτες δὲ αὐτὸν, καὶ μὴ θέλοντ^Θ, εἰπεῖν:
ἐποίησαντο καὶ αἰηγόρδυταν Περαβοχώ. Ος
καὶ τὸ σκαῦδαλον αὐτὸν ἀνέστησαν ὄρῳ; καὶ
τὸν ἄλωσιν πεφέλεγων, παρητήσαντο: περε-
πώμηντὸν τῷ ιδίῳ σωτέρικο, τῷ μεγάλῳ δύ-
κι: ὃς οἱ ἀγαρίνοι σφάξας τοῦ ζήτης αὐτῷ
ἔμπειθεν αὐτῷ: ὁ καὶ γένουεν βασιλέα, ὃς ὁ ἄ-
γι^Θ αὔθρωπ^Θ πεπειπει:

Ο Βασιλεὺς σῆ^Θ, πεσὼν ἐν γόσφι δεινῷ,
τῇ τῇ δέθεται^Θ, ἐκεῖτο πάσχει μεγά-
λως. Ο σύλπεν^Θ δὲ μυρεφτης, ὃς καρεοθεὶς
πλέτε καὶ σύζητο: καταλιπὼν τὸν ἡγεμο-
νίαν πεφέλεγων τῷ μὲν σύλπᾳ Μεχεμέτῳ, τῷ
έν μαγνησίας Διάτεροντα: αὐτὸν μεν με-
καλέσατο; καὶ ἐτοσε Βασιλέας: αὐτὸς σῆ^Θ ὁ
πατρὸς γυλταν Μυρεφτης, πορσύθεις ἐν ταῖς
τητῷ μαγνησίᾳ, καὶ αὐτοκράτορισας αὐτάν-
τορει^Θ οὐδεις, ιδίαζεν ἐντὸς τάτωμα: καὶ ἐγινέτη Βίοι
εἰρηνικοί, ὃς γηραῖ^Θ ἔμφρων. ὁ σύλπᾳ
μεχεμέτης σῆ^Θ, νέ^Θ: ὁμηρία, καὶ μέρση^Θ
πρέχων ἡλικίαν: εἶχε βελτίονας φρονιμω-
τάτος: τούτη χαλικιπατίαν, καὶ περιμπα-
σίαν: ἀλλ' ὅλως στοκ ἡπειρούπολιν ἐν γ-
δενὶ: ἐχολάζετο σῆ^Θ κινητοῖς καὶ
πότοις:

Αἰχόσιτες σῆ^Θ οἱ τῶν Οὐγγρῶν ἄρχον-
τες: ὅτι Βασιλέων ἐτούτης ἐν ἀγαρίνοις
νέ^Θ, καὶ ἄπικρ^Θ τῷ πολέμῳ: ἀρρηγναν κα-
ὶ τῷ τῷ ἀγαρίνῳ. Τὸ πλεόν μὲν εὐστέτητο ἐπ-
μηνυμάτων τῷ Βασιλέως τῆς πόλεως, πέρος
τὸν κεφάλην, καὶ τὸν παγγοῦν, δὲ πλεύσας προ-
τηγός: εἰπόντ^Θ τὸν πόρκων τῷ Βασιλέως:
ώς, εἴσιν διαηθῆσ^Θ εἰπελεῖν τὸ ἐχθρὸν ἡμῶν
ἐκ μέσην τὸν τέμπειαν τῆς ἐμῆς Βασιλείας, Θήσ
σω ἐν τῷ σῇ κορυφῇ: ὃς ἐλέθερωτιν τῷ
εἰσιτανῶν, δὲ τῆς τίσεως ἡμῶν τύλον. Καὶ ἐ-
τεροὶ ἥματα ὄμοιαι, ἐπαναγκάσαν^Θ. δὲ τὸν
ποντικόν αὐτῷς: ἐφθασσούντος δὲ τῷ
πολαιμῷ διατύπει, μετὰ διωγμεως πολλῆς: λεη-
λατεῖτες τὰς χώρας δὲ καίστοις τῆς Βουλγα-
ρίας. ὑπέκυψαν γένοντος σχεδὸν ἀπαντα-

pter dissensionem ac confusione, que non mo-
dica erat, se ad eum honorem produci patere-
tur: in hac perturbatione manserunt. Nicet
verò Bessario, & Russia Antilles, Rome substitu-
terant: ubi in Cardinalium ordinem Bessario
cooptatus, amplissimo, honore affectus, concor-
diā & otium amplexus reuinuit.

Erat Constantinopoli Pneumaticus qui-
dam, vita sanctimonia praestans, nomine Gre-
gorius Mamma, magni Duci compater. Hunc
arreptum, Patriarcham fecerunt inuisum, ac
renitentem renuntiauerunt. Sed is dissidium
indies longius serpere videns, expugnationēq;
urbis prædicēs, se munere abdicauit: cum qui-
dem illi ipse suo compatrio prædictisset: filios eius
in conspectu ipsius, ab Agarenis trucidatum i-
ri: quod sancti viri vaticinum, ipso posterius
euentu comprobatum fuit. Imperator inte-
reca, magnos articulorum dolores habens, gra-
uiter afflatus decumbebat. At Sultanus Mu-
rata, satiatus & expletus opibus, ac gloria re-
rum gestarum: Regnum filio Mechemete, qui
Magnesia commorabatur, destinauit: accessis-
tumq; Regem constituit. Ipse verò Magnesiam
profectus: proprium sibi palatum edificauit:
in quo priuatus placidam & quietam vitam,
ut senex prudens, viuebat. Sultanus Meche-
mete, ut adolescens, leuibus pascebatur ven-
tis. Habebat is quidem Visiros, seu consiliarios,
prudentissimos: Chqlilbassam, & Breibas-
sam: sed prorsus nulla in reillis obedie-
bat: ac tantum venationibus coniuicijque
vacabat.

Vngari itaque, certiores facti: rei
Turcice prepositum esse hominem adolescen-
tem, discipline militaris imperium: in
bellum aduersus Agarenos ruerant. Id
principiū factum est Imperatoris Ioannis
literis & Legatis, ad Vngarie Regem, &
Ioannem Huniadem, præstantissimum bel-
li Ducem. Dixerat sub religione iurisu-
randi Imperator: Si poteris hostem
nostrum Europa exturbare: coronam
ego maiestatis meę, capiti tuo imponam:
ut liberatori Christianorum, & colum-
næ religionis nostræ. Addiderat & id ge-
nus alia: vim ad persuadendum habentia,
ipsosque cogentia. Descenderunt igitur, flua-
men Danubium secuti, cum magno exercitu:
trajicentesque in Bulgaria, ex agris & oppri-
dis prædas egerunt. Cesserunt ipsis propè omnia,

προσαρθρ-
υσιερείου
imperij
Græcorū.

Amtrata
imperium
Machome-
tæ F. tradit.

Vngaria
motus ad.
cas.

Ε.Γ.Δημ.Κ.Π.
ΙΩΑΝΝΙΝΑ 2008

κατελθόντες μέχρι Βάρδας αὐτῆς. Παρέλα
Βερσέκην αὐτίνι : τῶν ἀγαρίων πότῳ ἐ^π
κινηγεσίσις πεφεχόντων βασιλικῶς. Φι-
λέη ήδ, ὡς λέγεται τὸν παλαιῶν σεφῶν,
τὸν οὐρανοφόρον, γνώμην τῇ τὸν ἄρχοντα ἐπε-
δικιάζειν. Τότου πολέμου τῷ παλαιῷ φε-
ρεμένων οἵ δόντες οἱ Βεζήριδες, ὅτι καβαπ-
τηθῆσε πάσαις ὁ δύσις μετὰ μετάλησ ὄρ-
μησικὴν απολεθήσεται ἡ δέχηται αὐτῶν : διε-
μένωσαν τῷ γέροντα τὸν σταλπάν μυστή-
την, ὥστε τῷ μαγνησίᾳ, ὡς εἴπερεν : γερ-
ψαντες πάσας αὐτὸν γέτως. ὁ πόστος, βασι-
λέως, εστιν, καὶ ἀπέκρινεν τοῖς λεπτοῖς : Εἴ τε
ρεψε χειρον, ὅτι όδε οἶμαι, Κασιμφέροντα
συμβολωνταν, ακύρωτον. οὐδενὶ εἰλή-
πτος σωτήμασι τοιούτων δύπλεθῆται
τὸν πρέπει γένεται, καὶ πεσεῖται: καὶ εἴσαι η
ἀμαρτία τῷ στρατοῦ.

Ακόσιος δὲ σὺν τοιάτυς λόγγος, ἥλθεν

- αἴπηρὺ πόλεως ἐν χρυσοπόλει, τῷ λεγό-
μενον σκάταρι. Φοβόμενον δὲ θλαπερδ-
ον : ἥλθεν ὁ χαλὶκ πασίας μετὰ φυσίτην,
αὐτικὴν ὃν τὸ δύλικόν μέρες τῆς χώρας τὸ
απωμάτικον διεμελεύσατο τὸν βασιλέα,
ὅπως περίσσην αὐτῷ: ἵνα μὴ ἀπέλθῃ ἀπὸ
καλλιχόλεως, καὶ θλαπερδίσῃ: Εἴ τω ποιή-
σῃ μάχην μετὰ πόλεως. Ετελευθῆται
βασιλέως, κατέργυον: οὐδὲ ἐπέρεσεν αὐτόν, τῷ
μάχην φοβόμενον. Οὕτως η θαυμαστὴ
γνῶσις τῷ βασιλέως, ἐκατέρωθεν ἐκρέπτη.
πορθμεῖς δύνανται τῷ βαρνή, ουαπέπει πόλεμον
μετὰ τῷ οὐρανῷ: καὶ νικῶσιν αὐτῷ ποιη-
τελῶν, οὐδὲ κατακερδεῖσι: ἀφαιρίσαντες τὸν φυ-
σίτην δύσεως καὶ αἰσθολῆτας. Εὑων πόλεμον
ἐπεσυν πόλεσι ὄνομασοι καὶ μετάλοις: εὖων
ιδιὸς ὁ καρατζαρπασίας, μπογλερι-
πέης αὐτῆς αἰσθολῆτας. Εγένετο δὲ μέγας ἀφα-
νισμὸς εἰς σύναγορεύσας. Εμενεοδέσιος αὐ-
θέντης μετὰ τῆς πόρτης Ιερούνης. Εκάθισαν δὲ
εἰς βρύλιον οἱ οὐρανοί: ὅπως πολεμήσωσι,
καὶ αὐτισῶσι, καὶ ἀφαιρίσωσι καὶ τῷ πόρταν.
τοῦτο πέρι οὐαγκρινού: ἐμπειρότατον δὲ
πόλεμοις. λέγει δὲ ἐμπειρότερον τῷ κεφάλῃ,
καὶ τῶν δέχοντων. Φάνετο μοι καλὸν, ἵνα
πορθμῶν ἔγω μετὰ σκλεπτῶν σραπιωτῶν,
ῶν ἔχειν οἰδα. Κατέκιντο, θύμοκρυνθείς,
δύτυχοσα: τῷ ιερῷ χάρεις. Εαν δὲ γένη-
ται τὸ σκαντίον: παλιν ὁ κεφάλης ἴσσεται
μετὰ τὸ λαζαντόν. Εἰ δὲ πορθμῶν δὲ
κεφάλης, γείπηται δέ οὐ ἄλλος: τὸ μέλλο-
μενον

quocunq; venirent. Hoc modo Varnam usque
progressi, eam ipsam occuparunt: dum conui-
niens uenationibusq; Agareni, exēplo Regis sui
indulgerent. Ut enim apud quēdam prisorum
sapientum esti quales in Repub. sunt principes:
tales ipsi quoq; solent esse ciues. In hac peritur-
batione rerum, cūm proceres Turcici viderent
tanto impetu Occidentem conculcatum iri, su-
mū imperium peritum: his de rebus Sulta-
no Murata, quem Magnesia solitariam uitā
agere diximus; significant, literis in hanc sen-
tentiam scriptis: Filius tuus, Domine, adō-
lelcens est, & reium bellicarū crudis. Ac-
cedit alterum, non minus incommodum:
quod nec dicto nobis audiens est, utilia
consulentibus. Fac ergo, citō venias. Peri-
culum enim est, ne concidat genus no-
strum, & extirpetur: cuius malī culpa, to-
ta in tuo animo residuebit.

Reuocatur
ad Regnum
Amurata,
contra Un-
garos.

His Murata perceptis, Chrysopolin accessit:
quae ē regione Byzantij sita est, Scutaris vul-
go dicta. Ibi traiectum ipso metuente uenit
Chalibassacum copijs, ex aduerso, à parte Oc-
cidentis, ubi Asomati dictus locus est: ex quo
per nuntium monuit Imperatorem, trayceret
Muratam: ne is Callipolin abiens, ibi transfi-
ret: tuncq; imperatrici urbi belum faceret. Me-
tuēs ergo id periculi Imperator missa triremis;
illum traduxit. Ita factum, ut mira solertia
Regis, utrobīg superior extiterit. Profectus ad
Varnam, cum Ungaris acie decernit: à quibus,
exercitus ipsius Europaeus Asiaticusq;, fortissi-
mè fūsus fugatusq; est: multis magni nominis
Turcis occisis & inter hos, Caraztabasa, Oriē-
tis Bellerbeio: magnaq; Saracenorū strage edi-
ta, Sultanus cum suo præsidio, quod Porta no-
minatur, solo remansit. Consilium agitare Un-
gari de pugna redintegranda, & Porta quoq;
adorienda ac delenda. Ibi Huniades, ut rei mi-
litaris scientissimus, ad regem & proceres ver-
ba huiusmodi facit:

Clades
Varmensis
1444. No-
vemb. 10.

Mihi faciendum videtur, inquit: vt
ego cum delecta militum manu, quo-
rum virtus mihi nota est, eam. Nam si,
Deo iuuante, rem feliciter gessero:
gratia Deo habenda erit. Sin contrā
euenerit: saluus est Rex, cum exercitu
suo, rebus melioribus reseruatus. Quod
si, Rege ad præliandum profecto, of-
fensum fuerit, quod Deus auertat: quid
de

μερι γενέαδα ; Ήρεσε δὲ η τοιάντη Βγλή τῆς πρατιγῆς πάσιν, ὡς ἀξέλειπ . ὁ κεφάλης σῆς, νέος ᾧ , σύνικος τὸν συμφέρονταν παύτην Βγλαῖς : αὐτὸν ήκοντε Βγλὰς νεωμ, εἰπόνταν αὐτῷ . ὡς η νίκη, ἐως τὴν τῦπον σῆς ἔστιν . Οὐδὲν γένεται, εἰ μὴ τὸ λαβεῖν ιδίαν χερού τὸν αὐθέντην ἀχαρηνῶν . Εἰ δὲ πορθθεὶς οἴαγγες μέλλει γενέαδαν φέρει ; ὅπιατὸς ἐποίησε τὸν νίκην .

Ακόσας δὲ τὸν λόγον τῶν γένεων : Οὐδένες σύζωκαν τὰς δύο πολέμους σάλπιγγας ἐξ ἑκατέρης μέρες . Καὶ καθαλικόντες, χεροῖς καὶ μέθη κατοχοῖς (εὖθες αὐτοῖς πίνειν οἴγον πόλυ, καὶ μεθύσκειν) ὄφεις τῶν ενώπιον πάντων οἱ πεζῶται, καὶ μᾶλλον αὐτὸς : σύζωτες αὐτοῖς δρόμοι καὶ αδειακοί λαοί, καὶ τὰ ταλαθη . Εκ δύο τονότατος δύο σφοδρῶν πολέμων, καὶ τὸ μάχης, καὶ τῶν απειλών φένωμ, ηθέλησεν ὁ σύλτης Μαρεστης φυγεῖν . Εκάλυσαν δὲ αὐτῷ οἱ γενίτζαροι πόντες, ὅπις γενέτα εἶται, ίνα δοτοθεῖται μετ' ἡμῶν . Οὐδὲ κεφάλης, δύρων δρόμον, εἰσῆλθε, τολησάσας ἀπέκλισε τὸ σύλτονα : Εις δὲ τὸν γενιτζαρών; σύνομαν χαμαγέας, χρύσας δὲ τὸν ἐμπεισθίας πόδας δύπτες, μὲν πλέκυτος, ἀπέκοψεν αὐτός . Καὶ πεσὼν ὁ ἵωπ οὐδὲν τὸν αληθίον δύστην, ἐρήψεται κράλην . Καὶ πάσαντες αὐτὸν, ἀπέπεμπον τὸν κεφαλεῖν αὐτὸν : ποιήσαντες αὐτὸν εἰπάντα δύριον, ηλάλαξαν . Εὐθέως δὲ εἰς τὸ ποθεν εδραμένο λαός δύστην ἀπέκλισε . Οὐς καὶ κατεδιώξαντες οἱ ἀχαρηνοί, δύο μὲν ἀπέκλιψαν : δύο δέ, ἐλαβούς αἰχμαλώτων . Οἱ ταλάνοις δὲ αὐτῶν, διωκόμενοι, ἀπεπλύνοντες ἔντελίμην τὴν αληθίον Νάρην . Ταῦτα ἐποίησεν η κακοθυμία Βγλία .

Οὐδὲ οἶστος δέ, προϊδὼν τὸ ἐσόμενον : ὡς . σρατιότης, δή τι ἀλητὸς ὁ δύο ἀνεχθῆσαν, σὺ τῇ ιδίᾳ πατεῖσθαι . Καὶ δύτω πολύτονος πέλατος δέ, ἐργούσι οἱ πόλεμοι αὐτῶν ; καὶ αἱ συντλοναῖς .

Οὐδὲ σύλτης Μαρεστης, πατορέψας νικητὴς τροπαιόχος δέ, ἐποίησε τὸν γενιτζαρού τὸν χαμαγέαν, σφεντζάκηπειν φιλαθλελφεῖας . Απίσκαλε δὲ τὸν σύλτην μεχεμετη . τὸν ίσον αὐτὸν, ταύτην σὺ Μαργησία, διώσας τοῦ πεζῶτον ήν . Αὐτὸς δὲ προσέλαβὼν πάσαν τὸν Βασιλέαν, ἐκάθητο σὺν αὐτοῖς τούτοις : μένων σὺν δύναμερίᾳ, καὶ συνέφων . Μετὰ δὲ τὸν δύστην προμένει εἰπών τριῶν ἐπελέσθης, ταφεῖσθαι την πέτραν, Βασιλέας ταῦτας ἔτη . *

de nobis fiet . Placuit consilium optimi Duci optimum omnibus . Sed Rex atque ex animo iuuenile præditus, id audire, quamvis salutare, noluit : verum consilijs juniorū auctoritatis, dicentium : Victoria penes te stetit, Rex, hactenus : nec aliud quicquam restat, nisi ut ipse tuis manibus, Principē Agarenum capias . At si Ioannes fuerit; ei victoriæ partæ gloria, ut autoī, accepta refertur .

Probato itaq; juniorū consilio : continuo ex utrāq; parte, tubæ bellicum cecinerunt . Tunc equis profecti alacres, vino ad ebrietatem hau sto (quippe gens camiliū vini bibere, & inebriari solet) irruerunt primi in conspectu omnium proceres . & magis ipse Rex viameis cursum dantibus militibus & exercitu . Commissum fuit tantio animorum ardore pralatum, tanta cadentiū strage: ut iam fugam inire Murata vellet . Sed obstiterunt Ianizari, discentes . Manendū tibi est; & nobiscū morlendū . Rex, via ferro patefacta, sine ordine ad Sultanum usq; imprudenter penetravit . Ibi Ianizarorum quidam, cui nomē Chamuzæ, anteriores Regij equi pedes bipenni absidit: quo propè Sultanum collapo, Rex humiliatus accepit . Cuius capti caput præcisum, hæste infixum, ac sublime portasum, fuit: addito leto, tanquam victoria iam parta, clamore . Quo spectaculo percussus Vngaricus exercitus, statim pedem retulit universus, ac fugit . Hos insecuri hostes, partim occiderunt, partim viuos ceperunt . Maior tamen pars, inter fugiendum in palude Varne vicina, submersa periret . Hic malū consiliū existens fuit .

At Ioannes, futuri haud improvidus: habitu ac specie gregarij militis, alia vi in patriam suam rediit . Hunc sicut in bellum hoc, & rugore habuit .

Sultanus vero Murata, vicitur cum optimis spolijs reversus, illum victorie auctorem Ianizarum, cui nomen Chamuzæ juisse diximus, Philadephie Saniachū fecit: Filium Mechmetam, Magnesiam, ubi anteā vixerat, remisit . Ipse, repetita Regni totius administratione, Adrianopolis residebat: rebus gestis fortunatus, felicitate & deliciis partis fruens . Triennio post clapsō, finē vite fecit, Prusā sepultus: postquam XXXII. annos regnasset,